विदया-भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

नीतू कुमारी, वर्ग -पंचम, विषय- हिंदी,

दिनांक-03-07-2021   एन.सी.ईआर.टी पर आधारित

पाठ -8 हमारे वृक्ष

सुप्रभात बच्चों,

आज की कक्षा में हमारे वृक्ष के बारे में जानना है जो इस प्रकार हैं-

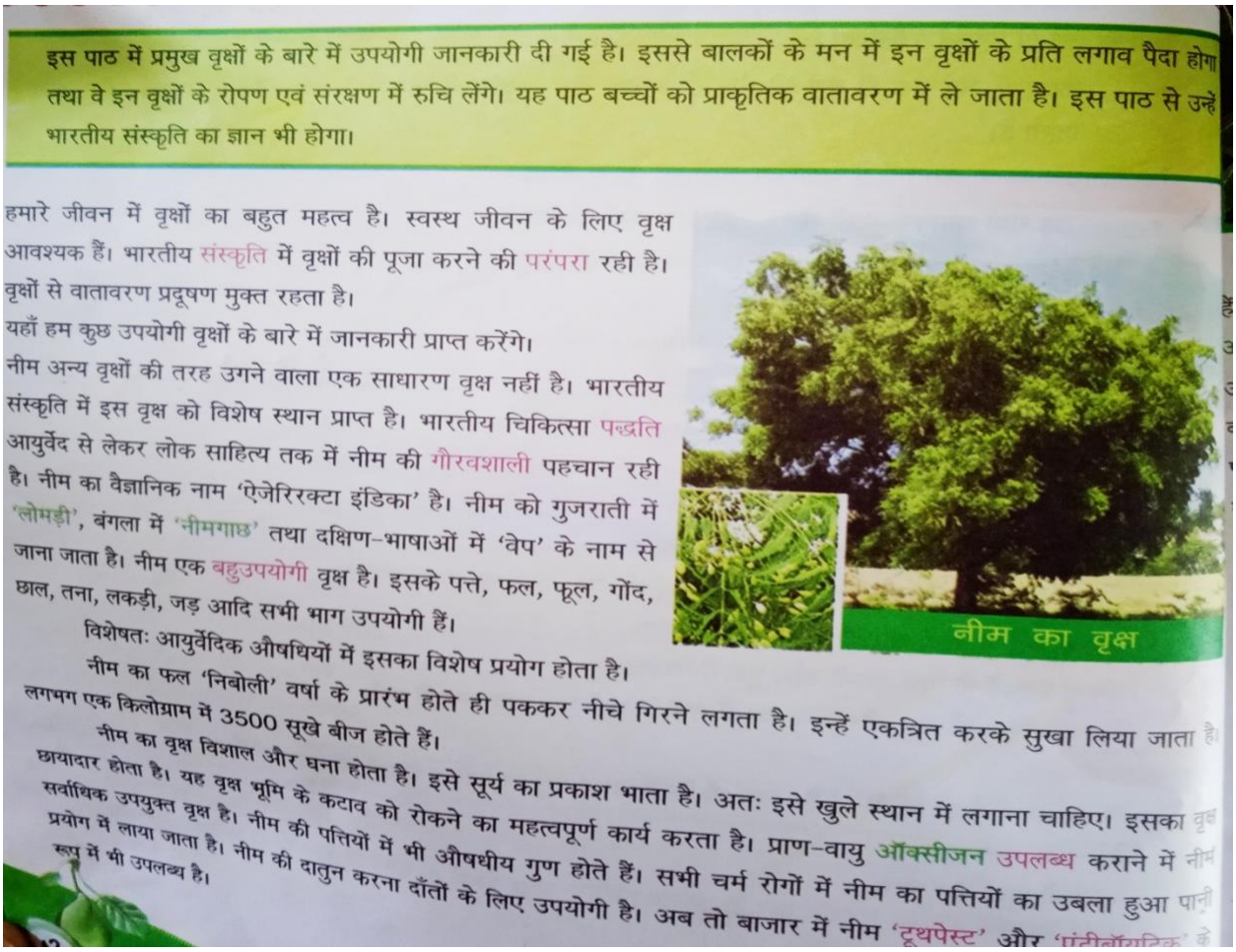

इस पाठ में प्रमुख वृक्षों के बारे में उपयोगी जानकारी दी गई है। इससे बालकों के मन में इन वृक्षों के प्रति लगाव पैदा होगा तथा वे इन वृक्षों के रोपण एवं संरक्षण में रुचि लेंगे। यह पाठ बच्चों को प्राकृतिक वातावरण में ले जाता है। इस पाठ से उन्हें भारतीय संस्कृति का ज्ञान भी होगा।

हमारे जीवन में वृक्षों का बहुत महत्व है। स्वस्थ जीवन के लिए वृक्ष आवश्यक हैं। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की पूजा करने की परंपरा रही है। वृक्षों से वातावरण प्रदूषण मुक्त रहता है।

यहाँ हम कुछ उपयोगी वृक्षों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

नीम अन्य वृक्षों की तरह उगने वाला एक साधारण वृक्ष नहीं है। भारतीय संस्कृति में इस वृक्ष को विशेष स्थान प्राप्त है। भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद से लेकर लोक साहित्य तक में नीम की गौरवशाली पहचान रही है। नीम का वैज्ञानिक नाम 'ऐजेरिरक्टा इंडिका' है। नीम को गुजराती में 'लोमड़ी', बंगला में 'नीमगाछ' तथा दक्षिण-भाषाओं में 'वेप' के नाम से जाना जाता है। नीम एक बहुउपयोगी वृक्ष है। इसके पत्ते, फल, फूल, गोंद, छाल, तना, लकड़ी, जड़ आदि सभी भाग उपयोगी हैं।

नीम का वृक्ष

विशेषतः आयुर्वेदिक औषधियों में इसका विशेष प्रयोग होता है।

नीम का फल 'निबोली' वर्षा के प्रारंभ होते ही पककर नीचे गिरने लगता है। इन्हें एकत्रित करके सुखा लिया जाता है। लगभग एक किलोग्राम में 3500 सूखे बीज होते हैं।

नीम का वृक्ष विशाल और घना होता है। इसे सूर्य का प्रकाश भाता है। अतः इसे खुले स्थान में लगाना चाहिए। इसका वृक्ष छायादार होता है। यह वृक्ष भूमि के कटाव को रोकने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। प्राण-वायु ऑक्सीजन उपलब्ध कराने में नीम सर्वाधिक उपयुक्त वृक्ष है। नीम की पत्तियों में भी औषधीय गुण होते हैं। सभी चर्म रोगों में नीम का पत्तियों का उबला हुआ पानी प्रयोग में लाया जाता है। नीम की दातुन करना दाँतों के लिए उपयोगी है। अब तो बाजार में नीम 'टूथपेस्ट' और 'एंटीबॉयटिक' के रूप में भी उपलब्ध है।

नीम के वृक्ष के बारे में यह मान्यता है कि यह वृक्ष जहाँ होता है, वहाँ रोग नहीं पनपते। इसकी सूखी पत्तियाँ जलाई जाएँ तो मच्छर भाग जाते हैं और मलेरिया से बचाव हो जाता है। नीम की सघन छाया व्याकुल पथिक को प्रसन्नचित्त कर देती है। हमें नीम के वृक्ष भरपूर संख्या में लगाने चाहिए।

पीपल प्राचीन काल से ही भारतीयों का पूजा एवं श्रद्धा का वृक्ष रहा है। इसे हमारे ऋषि-मुनियों ने पुण्य फल देने वाला बताया है।

पीपल भारतीय मूल का वृक्ष है। इसे वनस्पति शास्त्र में 'फाइकस रिलीजओसा' कहते हैं। इसे बंगला में अश्वत्थो, गुजराती में जारी पीपल, तेलुगु में आशवथमु एवं बोधि, तमिल में आसु, कन्नड़ में अराली, मलयालम में अरच्छू व अराचल कहते हैं। पीपल का वृक्ष विशाल आकार का होता है। इसका छत्र खुला और बिखरा होता है। इसकी शाखाएँ चारों ओर फैली होती हैं। यह पर्णपाती वृक्ष है। इसकी पत्तियाँ चमकदार, चौड़ी, जाली वाली तथा शिखा पर लंबी व तीखी होती हैं। पीपल को सभी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है। इसके बीजों को सामान्यतः जमीन में बोकर अथवा पौधशाला में सामान्य विधि से पौधे तैयार कर वृक्षारोपण किया जा सकता है। टहनियों को काटकर भी इसे रोपा जा सकता है। पीपल का वृक्ष वन-क्षेत्र, खेत, जलाशय और धार्मिक स्थानों पर लगाया जाता है। यह तेजी से बढ़ता है तथा छायादार होता है। इसकी जड़ें पृथ्वी के समानांतर फैलती हैं जो भूमि के कटाव को रोकती हैं। इसमें फूल और फल अप्रैल से जून के मध्य आते हैं। इसका फल छोटा तथा पकने पर काला अथवा बैंगनी रंग का होता है। सामान्यतः यह पक्षियों के खाने के काम आता है।

पीपल की पत्तियों में प्रोटीन, कैल्शियम व फासफोरस की प्रचुर मात्रा होती है। इसकी पत्तियाँ बकरियों और हाथी को

गृहकार्य-

दिए, गए अध्ययन- सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें और कठिन शब्द चुनकर लिखें।